डॉB केनेथ मैथ्यूजÆ उत्पत्तिÆ सत्र ÐÆ
नूह और जलप्रलयÆ भाग ĈÆ उत्पत्ति DÈEÁEÈČE

© 2024 केनेथ मैथ्यूज और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज और उत्पत्ति की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 7, नूह और जलप्रलय, भाग 1, उत्पत्ति 6:9-9:29 है।

सत्र सात नूह और जलप्रलय के बारे में है, और हम यह सवाल पूछकर शुरू कर सकते हैं कि उत्पत्ति के लेखक ने नूह और जलप्रलय प्रकरण पर इतना ध्यान क्यों दिया है? यह श्लोक एक से ग्यारह तक के शुरुआती अध्यायों में सबसे लंबी कथा है।

आप पाएंगे कि अध्याय छह और सात नूह के कमीशन के लिए तैयारी कर रहे हैं, और फिर जहाज का निर्माण, और फिर बारिश का गिरना। अध्याय आठ में, हमारे पास बाढ़ के पानी का कम होना है, अध्याय आठ का समापन नूह और परिवार के जहाज से उतरने के साथ होता है, और फिर नूह एक वेदी बनाता है, और वह प्रभु की आराधना करता है, और प्रभु आश्वासन देता है कि पृथ्वी फिर कभी बाढ़ के पानी से नष्ट नहीं होगी। तो, अध्याय छह, सात और आठ बाढ़ के उदय और फिर उतरने के बारे में हैं।

अध्याय नौ भी शीर्षक के अंतर्गत आता है, ये नूह की पीढ़ियाँ हैं, और अध्याय नौ फिर परमेश्वर की वाचा है जो उसने नूह और पृथ्वी के सभी प्राणियों के साथ की है। तो, हमारे पास नूह को दिए गए ये कई अध्याय हैं। साथ ही, हम पाएंगे कि लेखक बाढ़ के बारे में विवरणों में बहुत रुचि रखता है।

अब, जब आप इस पर विचार करते हैं, तो आपको यह निष्कर्ष निकालना होगा कि लेखक के मन में, नूह और जलप्रलय इस बात का एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि वह क्या सिखा रहा है और उसका धर्मशास्त्र और विश्वदृष्टि क्या है। इसलिए, हम नूह और जलप्रलय को उत्पत्ति 1 से 11 में परिवार के सार्वभौमिक इतिहास के बारे में उत्पत्ति के लेखक द्वारा प्रस्तुत थीसिस का एक बहुत अच्छा उदाहरण पाते हैं। यह पूरी धारणा है कि ईश्वर के पास मानवता के लिए एक आशीर्वाद है और वह इस आशीर्वाद को लाएगा क्योंकि वह मानव परिवार को अध्याय एक, श्लोक 28 के आशीर्वाद को पूरा करने के लिए नियुक्त और सक्षम करता है, जहां ईश्वर कहता है कि मानव परिवार को प्रजनन करना है और उन्हें पृथ्वी पर प्रभुत्व का प्रयोग करना है।

अब, हालांकि, उस आशीर्वाद के लिए खतरे हैं, और बगीचे में विद्रोह के परिणामस्वरूप, कैन द्वारा हाबिल के खिलाफ हत्या, और फिर मानवीय दुष्टता का प्रक्षेपवक्र और उदय जो इतना व्यापक और इतना तीव्र हो जाता है कि अब इस बाढ़ की आवश्यकता है। इसलिए, परमेश्वर का न्याय मानव परिवार पर पड़ता है क्योंकि दुष्टता इसे रोक देगी और मानव परिवार के लिए परमेश्वर के अच्छे उद्देश्यों को खतरे में डाल देगी। और यह, हालांकि, बगीचे से बार-बार कैन और हाबिल के साथ, बगीचे के वृत्तांत के साथ जोड़ा जाएगा, उन्हें एक उद्धारकर्ता का वादा किया जाता है।

वे बगीचे के बाहर जीवन के लिए तैयार हैं। और फिर , बगीचे के बाहर, हम पाते हैं कि यद्यपि परिवार के धर्मी संतान हाबिल की कैन द्वारा हत्या कर दी जाती है, लेकिन सेठ की जगह ले ली जाती है। और अध्याय चार के बाद अध्याय पाँच में सेठियों की वंशावली दी गई है ।

और वहाँ, हालाँकि हमारे पास निरंतर प्रतिध्वनि है, और फिर वह मर गया, जो सेथाइट वंशावली में से प्रत्येक को एक निष्कर्ष देता है, वहाँ हनोक है जो परमेश्वर के साथ चला और मृत्यु का अनुभव किए बिना उसका अनुवाद किया गया, जो एक अनुस्मारक था कि परमेश्वर के पास मानव परिवार के लिए जीवन का आशीर्वाद है। यदि वे हमारी संगति के अनुरूप रहेंगे, परमेश्वर के नैतिक तरीकों पर चलेंगे, तो हम पाते हैं कि अध्याय छह, श्लोक एक से आठ, अध्याय पाँच में पाई गई वंशावली और उसके बाद आने वाली बाढ़ के विवरण के बीच सेतु बनाने में एक महत्वपूर्ण मार्ग रहा है। दोनों के बीच यह इतना महत्वपूर्ण सेतु क्यों है इसका कारण यह है कि यह कैन के वंशजों, विद्रोही, दुष्ट वंश और संतानों, सेथाइट्स के धर्मी वंश के बीच अंतर्विवाह का वर्णन करता है ।

सीमाएँ पार की जाती हैं, और इसका परिणाम व्यापक दुष्टता है जो नूह के समय में उस युग की विशेषता है। इसके बाद, हम नूह का वर्णन पाते हैं, जो अपनी पीढ़ी में सबसे अलग है। तो यह हमें यह समझने के लिए पृष्ठभूमि देता है कि मानवता की दुष्टता और हिंसा के खिलाफ उचित न्याय के बीच जो मानव परिवार के अधिक से अधिक विकृति और विनाश की ओर विकसित हुई है, फिर, परमेश्वर उस मानव परिवार के दयालु संरक्षण को पूरा करने का चुनाव करता है जिसे वह प्यार करता है, और जिसके द्वारा वह स्त्री की संतान के माध्यम से उद्धार की अपनी प्रगतिशील योजना को जारी रख सकता है, जैसा कि अध्याय तीन, श्लोक 15 में मानव परिवार के लिए वादा किया गया है।

अंधकार के बीच में प्रकाश की वह किरण, पाप और हिंसा का वह घोर अंधकार जो घटित होता है, नूह के माध्यम से आने वाली है। तो, हमारे पास ये भाग हैं, जो इस लंबी और विस्तृत कथा को बनाते हैं क्योंकि यह उत्पत्ति 1 से 11 के व्यापक धार्मिक संदेश के साथ बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है। हम इस कथा में होने वाले उलटफेर को देखेंगे, जिसमें एक साहित्यिक व्यवस्था है।

यह धर्मशास्त्रीय अंतर्निहित थीसिस की बात करता है। साहित्यिक रूप से यह होगा कि कैसे ईश्वर सृजन को लेता है और उसे उलट देता है, सृजनहीनता, और फिर आगे बढ़कर अपनी रचना को पुनर्स्थापित करता है। अब, परिवर्तन होंगे, और मैं इनके बारे में थोड़ी देर में बात करूँगा।

इसलिए, अगर हम व्यवस्था को देखें, तो पानी सृजन और अ-सृजन को प्रभावित करता है, और जिस भाषा का इस्तेमाल किया गया है, वह बताती है कि कैसे भगवान ने अध्याय एक में जो बनाया था, उसे अ-सृजन करता है, और फिर वह आगे आता है और फिर से बनाता है। अगर आप साहित्यिक व्यवस्था को देखें, तो आप सोच सकते हैं कि अध्याय छह और सात का संबंध कमीशनिंग, जहाज़ के निर्माण और फिर पानी के ऊपर उठने, उस शिखर से कैसे है। और अगर आप अपने मन में एक पहाड़, माउंट अरारत, पर चढ़ने के बारे में सोचेंगे, और फिर यह शिखर पर पहुँचता है, और फिर यह उलट जाता है क्योंकि पानी कम हो जाता है और ज़मीन सूख जाती है।

और इसलिए कि परमेश्वर द्वारा बचाए गए शेष लोग जहाज से उतरते ही धन्यवाद की भावना से प्रभु की आराधना करते हैं। और फिर, नूह से, उसके तीन बेटे एक पूरी तरह से नई संतान पैदा करेंगे जो परमेश्वर के आशीर्वाद के तहत जीएँगे, जिसके बाद अध्याय नौ में परमेश्वर

द्वारा की गई वाचा का नाम दिया जाएगा। और वादे नए सिरे से किए जाते हैं, और परमेश्वर द्वारा बगीचे में आदम और हव्वा को दिए गए आश्वासनों को फिर से दोहराया जाता है।

इसके बाद, आप पाएंगे कि अध्याय नौ, श्लोक 20 से 29 में एक खंड है, जो नूह के नशे में होने और उसके बेटों के बारे में उसके द्वारा दिए गए शाप के आशीर्वाद का वर्णन करता है। इसलिए, यह एक सुखद नोट पर समाप्त नहीं होता है, और यह निश्चित रूप से एक शुरुआती नोट पर शुरू नहीं होता है, लेकिन कहानी की संरचना हमें बताती है कि परमेश्वर के पास एक योजना है और परमेश्वर इस योजना का पर्यवेक्षण कर रहा है, और जब हम उत्पत्ति की पुस्तक को पढ़ना जारी रखते हैं, तो वह इसे एक सुखद निष्कर्ष पर ले जाएगा क्योंकि आशा है। अब, जब यह बाढ़ आती है, तो समय अवधि लगभग एक वर्ष होती है।

अध्याय सात, श्लोक 11 में, यह हमें बताता है कि नूह और उसका परिवार जहाज़ में प्रवेश कर गया, और फिर अध्याय आठ, श्लोक 13 में, हमें बताया गया है कि वे जहाज़ से बाहर निकल गए, और फिर विवरण बाढ़ से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाओं को बताने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। अब, जहाज़ खुद लगभग 150 गज लंबा और लगभग 25 गज चौड़ा है, और यह तीन मंजिलों से बना है। आप इसे एक तैरते हुए आयताकार बजरे के रूप में सोच सकते हैं जिसे तूफ़ानों से बचने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

यह स्वतंत्रता, सुरक्षा और मुक्ति की जेल थी, अजीब बात है, क्योंकि यह इस लंबे साल के दौरान एक जेल थी, लेकिन साथ ही, इसने उन्हें पानी से भी बचाया। तब हम पाते हैं कि, अगर आप अपने मन में ऐसी संरचना के बारे में सोचते हैं, तो इसका कोई कप्तान नहीं है सिवाय भगवान के। कोई पाल नहीं है।

इसमें कोई पतवार नहीं है। यह सब ईश्वर की दैवी संप्रभु देखभाल में है, जो नूह और परिवार के अस्तित्व की देखरेख करता है। यह आपकी मदद कर सकता है, क्योंकि हम खेल को एक सादृश्य के रूप में जानते हैं, कि इसकी लंबाई, 150 गज, लगभग एक फुटबॉल मैदान की लंबाई के बराबर है।

अब, इस कथात्मक विवरण की लंबाई और विस्तार तथा व्याख्याकारों के लिए चुनौतियों के कारण, तथा उत्पत्ति की पुस्तक के लिए यह कितना महत्वपूर्ण है, हम संभवतः इस कथा को दो भागों में समझेंगे। इसलिए, आज का सत्र सातवाँ भाग पहला है। सत्र आठ हमारे समय का समापन करेगा, तथा उसके बाद का सत्र यही होगा।

मुझे लगता है कि यहाँ एक साइडबार होना अच्छा रहेगा, एक अलग विषय जो प्राचीन निकट पूर्वी पृष्ठभूमि के संबंधों के बारे में बात करेगा, कि हमें उन्हें बाइबिल के समानांतरों के प्रकाश में कैसे व्याख्या करना है, और वे हमें कैसे सूचित कर सकते हैं और फिर भी एक प्रिज्म हो सकते हैं जिसके माध्यम से हम बाइबिल के विवरण को पढ़ते हैं, बल्कि हमें पूरक जानकारी देते हैं। तो चलिए शुरू करते हैं; यदि आपके पास एक नक्शा है, तो एक एटलस बहुत मददगार होगा, और शायद आपकी बाइबिल के पीछे, आपके पास नक्शों की एक श्रृंखला होगी। मैं सबसे पहले इज़राइल की दुनिया के बारे में बात करने जा रहा हूँ।

इज़राइल की दुनिया। अगर आप पश्चिम में भूमध्य सागर और फिर पूर्व की ओर की कल्पना कर सकते हैं, तो आपको मेसोपोटामिया के राष्ट्र मिलेंगे। मेसोपोटामिया का मतलब ही दो नदियों की भूमि है, जो फ़रात नदी में बाघों को संदर्भित करता है।

तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के आरंभ में, एक उच्च सभ्य राष्ट्र के लोगों का एक समूह था,

सुमेरियन, और मैं यह सावधानी से कहना चाहता हूँ क्योंकि मैं नए नियम में वर्णित सामरी लोगों के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ। बाइबिल में सुमेरियों का नाम नहीं है। उनके बाद अक्कादियन के रूप में याद किए जाने वाले लोग आए, और फिर उसके बाद एमोराइट्स का आक्रमण हुआ, और एमोराइट लोगों के सबसे महान राजा, आपने उनके कानून संहिता, हम्मुराबी के कानूनों के बारे में सुना होगा, और उन्होंने लगभग 1800 ईसा पूर्व शासन किया।

खैर, जैसा कि आप देख सकते हैं, तीसरी और दूसरी सहस्राब्दी के दौरान, टिगरिस-यूफ्रेट्स, सुमेरियन, अक्कादियन, एमोराइट्स के उस क्षेत्र में अस्थिरता थी, और फिर जब हम पहली सहस्राब्दी में आगे बढ़ते हैं, तो आपके पास बेबीलोनियाई और असीरियन हैं। इसलिए, सभी इतिहासकार इस बात पर सहमत हैं कि यह क्षेत्र संभवतः सभ्यता का जन्मस्थान था, जैसा कि बाइबिल में प्रस्तुत किया गया है। अब, यह पूर्व की ओर है, और फिर इज़राइल के दक्षिण में, निश्चित रूप से, मिस्र के महान लोग, मिस्रवासी हैं।

मिस्रवासियों और मेसोपोटामिया के लोगों के समूहों के बीच अंतर, उनके सामाजिक-राजनीतिक जीवन के संबंध में, सहस्राब्दियों की शुरुआत में उस क्षेत्र में मिस्र के शासन की लगभग एकरूपता होगी क्योंकि नील नदी ने मिस्र के शासन की अधिक स्थिरता और एकजुटता प्रदान की थी। मिस्र की नील नदी ने तब भोजन का अधिक सुरक्षित और पूर्वानुमानित स्रोत प्रदान किया। बाइबल बताती है कि कैसे याकूब और उसके बेटों जैसे समूह भोजन खरीदने के लिए मिस्र में उतरे और यह कितना महत्वपूर्ण है कि यूसुफ ने भविष्य के भोजन और स्थिरता के स्रोत को सुरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो कई अलग-अलग समूहों के लिए उपलब्ध हो गया जो खरीदने और रहने के लिए मिस्र चले गए।

इसलिए, मिस्र के राजवंश, अधिकांशतः अपने जातीय शासन में कम थे। जब आप खुद इज़राइल के बारे में सोचते हैं, और हम प्राचीन नाम, कनान का उपयोग कर सकते हैं, तो यह इन दो महान शक्तियों के बीच आता है, और वह सीरिया-फिलिस्तीनी क्षेत्र, सीरिया-फिलिस्तीन होगा। यदि आप कल्पना करते हैं कि उपजाऊ अर्धचंद्र के रूप में क्या जाना जाता है, तो यह कृषि भूमि है, जो कि ये क्षेत्र सभ्यताओं को बनाए रख सकते हैं।

और यह एक चाप या अर्धचंद्राकार की तरह है। यदि आप पूर्व में टिगरिस-यूफ्रेट्स से शुरू करते हैं, और अपने मन में उत्तर-पश्चिम की ओर जाते हैं और सीरिया और फिलिस्तीन से होते हुए मिस्र में दक्षिण की ओर उतरते हैं, तो वह अर्धचंद्राकार है, वह सबसे पुरानी सभ्यता का चाप है। और इसलिए, आप देख सकते हैं कि प्राचीन कनान उत्तर की शक्तियों, जैसे कि उत्तर-पूर्व में हित्तियों, जैसा कि हमने असीरियन और बेबीलोनियों के बारे में कहा, और फिर दक्षिण में मिस्रियों के बीच एक महत्वपूर्ण भूमि पुल था।

इसलिए, उस क्षेत्र को नियंत्रित करने वाली इन महान शक्तियों में से किसी एक को इस प्राचीन निकट पूर्वी उपजाऊ भूमि को नियंत्रित करने में सामाजिक और राजनीतिक रूप से लाभ होगा। इसलिए, इज़राइल के उस क्षेत्र में, प्राचीन कनान और बाद में इज़राइल के बाइबिल कब्ज़े के समय के दौरान एक समान लोगों का समूह नहीं है। विशेष रूप से आप देखेंगे कि उत्पत्ति में और फिर पूरे टोरा में, हमारे पास विभिन्न जातीय समूह हैं: हित्ती, कनानी, एमोरी, पलिश्ती और अन्य।

दूसरे शब्दों में, वहाँ अनेक नगर-राज्य थे, एक समान साम्राज्य नहीं था, जैसे कि असीरियन, बेबीलोनियाई, मिस्रवासी, लेकिन यहाँ हमारे पास छोटे-छोटे राजा हैं। और ये विभिन्न राजा तीसरी और दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के लंबे इतिहास के दौरान कभी-कभी अपने भीतर स्वतंत्रता और परस्पर निर्भरता दिखाते थे, और फिर कभी-कभी वे मिस्रियों या मेसोपोटामियावासियों के अधीन होते थे। इसलिए, ये नगर-राज्य कनान की भूमि पर बिखरे हुए थे।

और इन नगर-राज्यों में जीवन शैली शहरी रही होगी, और उनके चारों ओर उनके शासन और शासन के चारदीवारी वाले शहर आम लोग थे। जिस तरह से कुलपिता और उनके जैसे लोग रहते थे, वह आज समाजशास्त्रियों द्वारा उनकी जीवन शैली में द्विरूपी कहा जाता है। डीआई, डीआई, का अर्थ है दो रूपात्मक रूप, जीवन में अपने जीविका प्रावधान को आकर्षित करने के दो रूप।

ये दो रूप क्या हैं? हम इसे बाइबिल के कुलपिताओं के जीवन में प्रतिबिम्बित होते देखते हैं। एक ओर, हम पाते हैं कि वे प्रवास करने वाले और घुमंतू लोग हैं, और इसका संबंध उनकी चरवाही से है। वे कुलपिताओं के लिए स्थानीय शहरों में निवास भी करते थे।

आप पाएंगे कि अब्राहम के लिए हेब्रोन एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान था। तो, यह कुलपिताओं की जीवनशैली है, और आप पाएंगे कि यह पूरे कुलपिता इतिहास में जारी है। अब, आइए बात करते हैं कि इन सभ्यताओं ने प्रारंभिक मानव इतिहास में सृष्टि के बारे में क्या कहा।

और जैसा कि मैंने पहले कहा, हम रुकना चाहते हैं और उस पद्धति के बारे में सोचना चाहते हैं जिसे हमें प्राचीन दुनिया की सभ्यताओं से सीखने के लिए अपनाना चाहिए। और जब कार्यप्रणाली की बात आती है तो जो सबसे आम बात है वह है तुलना करना और विरोधाभास करना, समानता और असमानताओं को देखना। अब, यह भ्रामक हो सकता है क्योंकि, हालाँकि आपके पास बहुत सारी समानताएँ हो सकती हैं या दूसरी ओर, बहुत सारी असमानताएँ हो सकती हैं, इन विवरणों से अधिक महत्वपूर्ण, जो वास्तव में आकस्मिक हो सकता है, वह है प्रत्येक समूह का मौलिक अंतर्निहित विश्वदृष्टिकोण।

और इन विभिन्न अन्य लोगों के समूहों के मामले में, उनकी विचारधारा में जो प्रमुख है वह यह है कि वे प्रकृति धर्मों को कैसे मानते हैं, और यह होगा कि उनके बहुदेववाद में विभिन्न देवता कैसे निर्मित व्यवस्था के क्षेत्रों या क्षेत्रों को नियंत्रित करते हैं, जैसे कि आकाश और अधोलोक। मुझे लगता है कि तिब समझने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में सीधे उधार न लिया जाए, बल्कि एक सार्वभौमिक सामान्य स्मृति, जैसे कि बाढ़ का विवरण, और यह कि बाइबिल का विवरण पाठक को

बाढ़ से संबंधित एक विश्वसनीय विवरण प्रदान करेगा, और फिर उससे व्युत्पन्न होकर आपको कहानियों के बीच अंतर और फिर सामान्य समानताएँ मिलेंगी। यह संस्कृति को समझने जैसा होगा, आप कह सकते हैं, फर्नीचर और हम कैसे पृष्ठभूमि पर आकर्षित हो सकते हैं बिना इस बात के गुलाम बने कि अन्य संस्कृतियों ने सृष्टि और महान बाढ़ का वर्णन और समझ कैसे की।

यह इस तरह हो सकता है: ज़्यादातर लोग जो कुछ शिक्षित हैं, वे चार्ल्स डार्विन की प्रजातियों की उत्पत्ति और उनके जैविक विकास के सिद्धांत के बारे में जानते होंगे। हालाँकि, बहुत कम लोग जो आपको प्रजातियों की उत्पत्ति में जो कुछ पाया जाता है, उसका कुछ बहुत ही संक्षिप्त विवरण दे पाएंगे, उन्होंने इसे कभी नहीं पढ़ा है। और मैं टोरा के पढ़ने में प्रारंभिक मानव इतिहास के पहले खातों के पाठकों के लिए भी यही कहूंगा, और वह यह है कि मानव इतिहास के इज़राइल के खाते और अन्य सृजन खातों और महान बाढ़ में जो हम पाते हैं, उसके बीच एक सीधा संबंध होना ज़रूरी नहीं है, बल्कि एक अप्रत्यक्ष संबंध होना चाहिए।

एक चीज़ जो हमें अलग करने की ज़रूरत है, वह है मिथक और उदाहरण के लिए किंवदंती के बारे में हमारी संस्कृति में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा। कभी-कभी, हम इन शब्दों को लेकर भ्रमित हो जाते हैं, और हमें हमेशा मिथक की सटीक समझ नहीं होती। हम मिथक को एक काल्पनिक कहानी के रूप में सोच सकते हैं।

चलिए मिथक से शुरू करते हैं और फिर मैं किंवदंती के बारे में बात करूँगा। मिथक, कई लोगों के लिए, सिर्फ़ एक कहानी है जो सच नहीं है, काल्पनिक है। जिसे मनोरंजन के लिए बनाया गया है।

प्राचीन लोगों की विचारधारा और धर्मशास्त्र का वर्णन करने में मिथक की बात करें तो इसमें कुछ और भी महत्वपूर्ण है, और वह यह है कि मिथक वास्तव में देवताओं और मानव जीवन में निर्मित व्यवस्था का वर्णन करने वाला एक विवरण था। और मिथक का उद्देश्य यह दिखाना है कि देवता न केवल प्रकृति को विकसित करने और बनाए रखने में सहायक थे, जिसके बारे में हम तुरंत सोचते हैं, बल्कि विभिन्न सामाजिक और सरकारी संस्थाओं में भी जो प्राचीन मानव परिवार के जीवन में आवश्यक थीं। इसलिए, जब बात आती है, जैसा कि आप जानते हैं, तो भगवान और प्रकृति, भौतिक और भौतिक के बीच एक सहवर्ती संबंध होता है।

तो, उदाहरण के लिए, आपके पास ऐसे देवता होंगे, जो प्रत्येक संस्कृति में सूर्य, सूर्य देवता के लिए नामित किए गए हैं। मिस्र में इसे रे, रे कहा जाता है। और यह समझा जाता था कि सूर्य के देवता ने ही सूर्य को उसकी सजीवता, उसका जीवन दिया है।

और इसलिए, परिणामस्वरूप, सूर्य स्वयं, देवता द्वारा शासित और नियंत्रित, इसलिए दिव्य है। और इस तरह वैचारिक रूप से सूर्य की पूजा की जा सकती है, उदाहरण के लिए। इनमें से अधिकांश सृजन कथाओं में देवताओं से पहले की बातें शामिल हैं।

दूसरे शब्दों में, देवताओं के सृजन या स्रोत को थियोगोनी कहा जाता है। और इसलिए, परिणामस्वरूप, पूजा के मामले में प्रकृति के शत्रुतापूर्ण या लाभकारी पहलुओं को अनुकूल रूप से नियंत्रित करने के लिए, लोगों की ओर से

देवताओं को अनुग्रह दिखाकर उन्हें नियंत्रित करने का प्रयास किया गया। अब हमारे पास मिस्र है, उदाहरण के लिए, और हम वहां से सृजन के वृत्तांतों से शुरुआत करेंगे।

सृष्टि का कोई व्यवस्थित धर्मशास्त्र नहीं है। देवताओं की रचना कैसे हुई और बदले में उन्होंने ब्रह्मांड की रचना कैसे की, इसके लिए कई तरह की व्याख्याएँ हैं। मैं सबसे पहले जिस बात का ज़िक्र करना चाहता हूँ, वह है हेलियोपोलिस का एटम।

अतुम, अतुम। वह सृष्टिकर्ता ईश्वर है। एकमात्र स्रोत जिससे सब कुछ निकलता है, वह उसके अस्तित्व से निकलता है।

और आपको याद होगा कि जब हमने सृष्टि के बारे में बात की थी, तो मैंने अंतर किया था, जैसा कि बाइबल हमें दिखाती है, कि सृष्टि की शिक्षा यह है कि ईश्वर ने सृष्टि को अस्तित्व में बोला और वह और सृष्टि स्वतंत्र संस्थाएँ हैं। दूसरे शब्दों में, सृष्टि ईश्वरीय नहीं है, और वह, यानी ईश्वर, सृष्टि पर निर्भर नहीं है, बल्कि सारी सृष्टि उस पर निर्भर है, उसके अस्तित्व से निकलने के रूप में नहीं, बल्कि उसके आधिकारिक शब्द द्वारा अस्तित्व में घोषित होने के रूप में। अब, जब बात अतुम की आती है, तो उसे एक आदिम पहाड़ी के रूप में दर्शाया जाता है जो सृष्टि-पूर्व जल से निकलती है, एक छोटी पहाड़ी, अगर आप इसके बारे में सोचना चाहते हैं, तो इन आदिम जल से घिरी हुई है, और वह वास्तव में खुद को अस्तित्व में लाता है।

दूसरे शब्दों में, उसकी एक शुरुआत है, जबकि बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर की कभी कोई शुरुआत नहीं थी। वह शाश्वत है। और इसलिए, छींकने, या थूकने, या हस्तमैथुन करने से, मैं अतुम, इस पहाड़ी, छोटे देवताओं से आया हूँ।

यहाँ अतुम का एक कथन है। वह कहता है कि मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसने मुझे बनाया है। मैंने अपने दिल की इच्छा के अनुसार खुद को बनाया है।

हेलियोपोलिस के विपरीत, मेम्फिस के मिस्रवासियों में एक और धार्मिक दृष्टिकोण पाया जाता है। इसे मेम्फाइट धर्मशास्त्र कहा जाता है, और यह भी एक पूर्व-अस्तित्व वाली शक्ति, हमेशा एक अवैयक्तिक शक्ति को दर्शाता है। और मिस्र में इस शक्ति का नाम Ptah, PTAH है, जो बौद्धिक सिद्धांत है।

वाणी, जब तक समझी जाती है, इस बौद्धिक सिद्धांत को प्रतिबिंबित करती है। और जादुई शब्दों का उपयोग करके, प्टाह आदिम पहाड़ी, या मोनाड से ब्रह्मांड का निर्माण करता है। यह मोनाड, जिसका अर्थ है एक, एक एकल इकाई है, जिसका नाम है अतुम।

अब बाइबिल की उत्पत्ति के साथ संबंध सतही है, जब हम मानते हैं कि यह जादुई भाषण बनाम एक ईश्वर है जो भाषा को नियंत्रित करता है, न कि ईश्वर को नियंत्रित करने वाले शब्द। जब मिस्र के परिप्रेक्ष्य में मनुष्य के निर्माण की बात आती है, तो इसे लगातार मिट्टी के निर्माण से, मिट्टी को आकार देने से समझा जाता है, जो हमें अध्याय 2, श्लोक 7 की याद दिलाता है। एक देवता का चित्रण है जो कुम्हार के चाक पर बैठा है, मनुष्य का निर्माण कर रहा है, और फिर देवी मनुष्य के नथुने में सांस देती है, जो आपको उत्पत्ति की याद दिलाएगा। दिलचस्प बात यह है कि जहाँ

उत्पत्ति का विवरण आपको महिला के निर्माण के बारे में बहुत विस्तार से बताता है, वहीं मिस्र के साहित्य में महिलाओं के निर्माण में बहुत अधिक रुचि नहीं है।

अब, आइए मेसोपोटामिया की ओर चलते हैं, जहाँ पौराणिक कथाओं का भी बहुत बड़ा संग्रह है। सबसे प्रसिद्ध रचना एनुमा एलीश है। मैं आपको उसका उच्चारण बताता हूं।

एनुमा, एनुमा, और फिर एलीश, एलीश। इस विवरण में दो आदिम जल का वर्णन है। नर आदिम जल अप्सू , अप्सू, अप्सू है , और मादा आदिम जल तियामत है, खारा जल, तियामत, तियामत।

ये नर और मादा जल हैं जो निश्चित रूप से जल के सहवास की बात करते हैं। और एक देवता की आकृति है जो अप्सू की हत्या करती है , और फिर परिणामस्वरूप तियामत ने बदला लेने का फैसला किया, इसलिए वह और उसकी राक्षसी सेना राजा के अधीन इकट्ठा हुई, मुझे कहना चाहिए किजिनरल, किंगू । और इसलिए यह लड़ाई हुई जो अप्सू को मारने वाले हत्यारे देवताओं के खिलाफ शुरू हुई ।

और फिर तियामत की राक्षसी ताकतों और देवताओं के बीच एक बड़ा युद्ध छिड़ जाता है। लेकिन उन्हें देवताओं के समूह में से एक ऐसा देवता ढूँढना होगा जो उनके पक्ष में खड़ा हो और तियामत से युद्ध करे, और वह है बेबीलोन का संरक्षक देवता, मर्दुक। वह   किंगू और तियामत से युद्ध करता है, उन्हें हरा देता है, और इनाम के तौर पर मर्दुक को एक महल मिलता है और वह देवताओं का राजा बन जाता है।

आप देख सकते हैं कि यह कैसे एक तरीका होगा जिससे बेबीलोन के महान राजा और राजा तथा उसके प्रजा के सामाजिक ढांचे को देवता के रूप में स्थापित किया जा सके। इसलिए, राजत्व की विचारधारा को देवताओं के जीवन द्वारा बनाए रखा जाता है और इसलिए बेबीलोन में जीवन के लिए इस तरह के आदेश को उचित ठहराया जाता है। इसलिए, तब बेबीलोन के राजा को मर्दुक के संरक्षण और प्रावधान के तहत समझा जाता था।

मनुष्य की रचना कैसे हुई? खैर, किंगू से जिसे मर्दुक ने मार डाला था, उसके खून और मिट्टी से एक आकृति आई, एक मारा गया देवता जो मानवता का स्रोत था, मनुष्य। अब, स्वर्ग और पृथ्वी आयाम है, और इसी तरह मर्दुक ने तियामत को एक सीप की तरह मार डाला। तो, उसके शरीर का ऊपरी आधा हिस्सा स्वर्ग है और यह एक मिथक का विचार है जो एक सार्वभौमिक सत्य प्रस्तुत करता है और यह सत्य को इस रूप में कायम रखता है कि यह प्रकृति के सभी पहलुओं और पुरुषों और महिलाओं को देवताओं के साथ सामंजस्य और निर्भरता में कैसे रहना है, इसका मूल आधार है।

अब जब प्राचीन निकट पूर्व के कनानी क्षेत्र में सृजन की बात आती है, तो आप पाएंगे कि मुख्य विचार ब्रह्मांडीय युद्ध का है। अब जब कनानी संस्कृति की बात आती है तो कोई निरंतर सृजन मिथक नहीं है। कई विद्वानों की ओर से एक प्रस्ताव है कि अराजकता के देवताओं और ब्रह्मांड के देवताओं के बीच लड़ाई के बारे में मिथक के परिणामस्वरूप सृजन विचारधारा का कुछ हिस्सा सामने आया।

एल कनानी देवताओं के समूह का मुख्य देवता था, और वह 70 से अधिक पुत्रों का देवता था, जिनमें से एक निश्चित रूप से बाइबिल से जाना जाता है, बाइबिल से अच्छी तरह से जाना जाता है, और वह

है बाल, BAAL। वह वह है जिसे सक्रिय देवता, वर्षा के देवता और फल के देवता के रूप में देखा जाता है। इसलिए, वह ब्रह्मांड की ओर से खड़े होने वाले एल के 70 पुत्रों में से एक बहुत ही संभावित देवता है, जो अराजकता के देवताओं को हराने के बाद, एक स्थायी जीवन व्यवस्था लाता है जिससे मानवता अस्तित्व में रह सकती है।

और इसलिए, इस युद्ध का सबसे प्रसिद्ध विवरण बाल और जल, यम के बीच है, जो कनानी भाषा में और हिब्रू भाषा में भी YAMM, YAMM है। अब, जब सृष्टि के विवरण की बात आती है तो हमें क्या समझना चाहिए? और अक्सर आप पाएंगे कि उत्पत्ति में प्रस्तुत विश्वदृष्टि वास्तव में देवताओं और देवियों के निर्माण के संदर्भ में प्राचीन निकट पूर्व के विश्वदृष्टिकोण के लिए एक विरोध, यहां तक कि विवादास्पद भी दिखाती है। और विशेष रूप से महत्वपूर्ण, जैसा कि मैंने पिछले सत्र में टिप्पणी की थी, प्रेरणा में अंतर है।

इस सृष्टि में प्रभु की प्रेरणा उनके प्रेम, उनकी भलाई से है। 1 यूहन्ना अध्याय 4, पद 8 में हमें बताया गया है कि परमेश्वर प्रेम है। और फिर हमें बताया गया है कि 1 यूहन्ना 4 पद 9 से 10 में अपने पुत्र को देकर इसे ठोस रूप से व्यक्त किया गया है।

और यहाँ श्लोक 9 में कहा गया है कि यहाँ, देखो, इससे हम परमेश्वर के प्रेम को जानते हैं, न कि हमने उससे प्रेम किया, बल्कि इससे कि उसने पहले हमसे प्रेम किया। और अब, उसने इसे कैसे प्रदर्शित किया? उसने अपने बेटे को उसके पापों के प्रायश्चित, प्रायश्चित के रूप में भेजा। अब, मैं जलप्रलय की घटना के बारे में कुछ शब्द कहना चाहूँगा।

आइए देखें कि मेसोपोटामिया की परंपरा में हमें क्या मिलता है। इसमें महान बाढ़ की घटना का सबसे विकसित ठोस विचार है। और इसे गिलगमेश महाकाव्य के रूप में जाना जाता है।

और गिलगमेश महाकाव्य की 11वीं पट्टिका में बताया गया है कि कैसे गिलगमेश, एक अर्ध-दिव्य व्यक्ति के रूप में, अनन्त जीवन की तलाश कर रहा है। और उसने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सुना है जिसे देवताओं से अमरता प्राप्त हुई थी। और जिस व्यक्ति का मैं नाम लेने जा रहा हूँ, मुझे कहना चाहिए कि यह ईश्वर और व्यक्ति, नूह का प्रतिरूप है।

वह मेसोपोटामिया का नूह है, ऐसा कहा जा सकता है। और उसका नाम है उत्नापिश्तिम। क्या मैं आपको इसका उच्चारण बताऊँ? उट, यूटी, बल्कि यूटी, नैप, नैप, उत्नापिश्तिम, इश और फिर टिम।

तो उतनापिष्टिम। गिलगमेश महाकाव्य में इसके समानांतर एक और विवरण है। और यह वास्तव में हमें सृष्टि से लेकर जलप्रलय तक ले जाता है, जैसा कि हम उत्पत्ति 1 से 9 में पाते हैं। इसका नाम अत्राहसिस है।

अत्राहसिस, अत्राहसिस, हसिस। अब, अत्राहसिस में, हम इस बात की प्रेरणा पाएँगे कि यह महान बाढ़ क्यों आई। और देवताओं की ओर से प्रेरणा यह थी कि मनुष्य किसी तरह देवताओं की नींद में खलल डाल रहे थे।

इसलिए, इन शोर मचाने वाले मनुष्यों का विनाश ज़रूरी था, और इसलिए, बाढ़ की योजना बनाई गई। शोर मचाने वाले मनुष्यों को हटाने के लिए वास्तव में कई प्रयास किए गए, लेकिन बाढ़ सबसे प्रभावी थी। अब, जीवन

और मृत्यु के बीच एक संबंध है, और गलिगमेश का महाकाव्य इसे स्पष्ट करता है, जैसा कि मैं कह रहा था, कि उपनपष्टिम को अमरत्व प्राप्त होता है।

गलिगमेश उसे खोजने के लिए वहाँ जाता है और पूछता है कि वह इसे कैसे प्राप्त कर सका। वहाँ, उसे समझ में आता है कि यह एक बार की घटना थी जिसे दोहराया नहीं जा सकता और उसे अमरता नहीं मिल सकती। लेकिन उपनापष्टिम गलिगमेश को एक उपहार देता है, और यह एक पौधा है।

यह पानी में पाया जाने वाला एक पौधा है। और इसलिए, गलिगमेश इस पौधे को वापस ले लेता है। यह एक ऐसा पौधा है जिसे गलिगमेश या पौधे के हिस्सेदार को पुनर्जीवित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था क्योंकि हालाँकि यह आपको अमरता नहीं देगा, लेकिन यह आपकी जवानी को बहाल कर देगा।

दुख की बात है कि इसमें एक साँप है, और यह आपको तुरंत उत्पत्ति के उस वृत्तांत के बारे में सोचने पर मजबूर कर देता है जो पौधे को चुरा लेता है और गलिगमेश से उसका कब्ज़ा छीन लेता है। इसलिए, जब आप इसकी तुलना उत्पत्ति से करते हैं, तो आप पाते हैं कि बाढ़ के वृत्तांत में जो कुछ भी होता है उसका आधार नैतिक पतन है। और यहाँ गंभीर अंतर है।

यह ईश्वर ही है जो मानवता के लाभ के लिए सृजन करता है, और जब हम पाते हैं कि मानवता गंभीर अनैतिकता में गिरती है, तो ईश्वर को बाढ़ के साथ कार्य करना चाहिए। जबकि बाढ़ की कहानियाँ जो आपको गलिगमेश और अत्राहसिस के महाकाव्य में मिलेंगी, प्राचीन निकट पूर्व से सुमेरियन बाढ़ का विवरण भी है। यह सब उस तरीके से संबंधित है जिस तरह से मानवता ईश्वर के हितों की सेवा करती है, और इसलिए, यह उत्पत्ति में जो आप पाते हैं उससे उलट है।

अब बाइबिल में वर्णित जल प्रलय के बारे में अपने विवरण पर वापस आते हुए, आइए कुछ साहित्यिक विशेषताओं पर नज़र डालें जो आपको इस विवरण में मिलेंगी। और ये साहित्यिक विशेषताएँ महत्वपूर्ण हैं। मैं सबसे पहले अध्याय 6, श्लोक 18 से बात करूँगा, और निश्चित रूप से, मैं उन सभी का नाम नहीं लूँगा।

लेकिन मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा स्थापित करूँगा, और तुम और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी पत्नी और तुम्हारे बेटों की पत्नियाँ तुम्हारे साथ जहाज में प्रवेश करेंगे। तो, आठ मनुष्यों का नामकरण हुआ, और यह वाचा केवल नूह के साथ ही नहीं, बल्कि पूरे नूह परिवार के साथ थी। यह पहली बार है कि बाइबल में वाचा शब्द आता है।

वाचा के बारे में सोचना सबसे अच्छा है, जैसा कि हम अब्राहम की वाचा, फिर बाद में इस्राएल के साथ की गई वाचा, मूसा की वाचा और फिर यिर्मयाह 31 में पाई गई नई वाचा के साथ खोजेंगे। ये वाचाएँ लेन-देन नहीं हैं, बल्कि एक रिश्ते की बात करती हैं। और यहाँ मन में जो रिश्ता होगा, वह निश्चित रूप से परमेश्वर और नूह के परिवार का होगा और कैसे वाचा आशीर्वाद और संरक्षण के वादों के साथ निर्धारित की गई है।

फिर, अध्याय 9 में, वाचा की विषय-वस्तु के विवरण पर चर्चा की गई है। बाढ़ के विवरण में आपको एक और बात मिलेगी, वह है शब्दों की पुनरावृत्ति और इन संख्याओं की पुनरावृत्ति। तो, आपको सात की पुनरावृत्ति, 40 दिन और रात की अभिव्यक्ति और 150 दिनों की पुनरावृत्ति मिलेगी।

और इसलिए, इस तरह की कथा के निर्माण में इस तरह की पुनरावृत्ति के लाभों से इसका क्या

संबंध है? और वह है बाढ़ के विवरण की एकरूपता और समरूपता पर इसका जोर। और कैसे वह पुनरावृत्ति दो या तीन अलग-अलग स्रोतों का परिणाम नहीं है जिन्हें एक साथ जोड़ा गया है, बल्कि यह एक सुसंगत कहानी के लिए बोल रही है, और कथा संरचना को समरूपता देने की पुनरावृत्ति हमें बताती है कि यह सब ईश्वर के संप्रभु नियंत्रण में है। और फिर जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, हमारे पास सृजन, असृजन, पुनर्निर्माण की प्रतिध्वनियाँ हैं, और शब्द चालें हैं।

यहाँ एक है: शब्द नूह, और हिब्रू में, इसका उच्चारण नूह, नूह है। जब आप अध्याय 8 की आयत 4 को देखेंगे, तो आप पाएंगे कि अध्याय 8 की आयत 4 के साथ, यह हमें बताता है कि जहाज़ अरारत के पहाड़ों पर आराम करने के लिए आया था। वह शब्द आराम नूह जैसा लगता है।

यह हिब्रू मूल शब्द नूच , नूच , नूच से आया है , और वास्तव में नूह मानव जीवन की चल रही विरासत को आराम देने में सहायक है। और टोरा के साथ महत्वपूर्ण संबंध बन रहे हैं। जिसका मैंने हमारे पहले सत्र के दिन उल्लेख किया था वह है आर्क पर शब्द खेल।

जल प्रलय के अलावा एक अन्य मार्ग में भी सन्दूक शब्द पाया जाता है, और वह हिब्रू शब्द है जिसका अनुवाद निर्गमन 2, श्लोक 2 से 5 में टोकरी के रूप में किया गया है। सन्दूक और टोकरी का निर्माण समान है। दोनों ही पानी में हैं और पानी से बचाए गए हैं। शिशु मूसा के मामले में, यह नील नदी का पानी था, और बाढ़ के मामले में, निश्चित रूप से, यह बाढ़ का पानी है।

इसलिए मुझे लगता है कि हम इससे जो सीख सकते हैं, वह यह है कि जलप्रलय के विवरण में, हमें कई तरीकों से स्पष्ट घोषणा मिलती है कि परमेश्वर तैरते हुए आयताकार जहाज़ का कप्तान है और एक नई सृष्टि की आशा इस जहाज़ की सीमाओं में है, यह निर्माण परमेश्वर द्वारा एक परिवार को संरक्षित करने के लिए इस्तेमाल किया गया है और एक परिवार को संरक्षित करेगा जो नूह में उभरेगा और होगा, नया आदम जिससे सभी लोग आएंगे। इसलिए, जब हम पद 9 में नूह के वर्णन में उपरलिख को देखते हैं, तो वह एक धर्मी व्यक्ति था, अपने समय के लोगों में निर्दोष था, और वह परमेश्वर के साथ चलता था। यहाँ हमारे पास एक ऐसे व्यक्ति का वर्णन है जो अपने समकक्षों की तुलना में विश्वास से नैतिक जीवन जीता था, और फिर वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने विश्वास से प्रभु के निर्देश पर इस जहाज़ का निर्माण किया।

नूह और जलप्रलय के बारे में संदेश हमें मुख्य रूप से बताता है कि जब मानवता के परिवार की बात आती है, तो परमेश्वर पाठक को आशा देता है कि परमेश्वर ही वह है जो अधीक्षक है। अध्याय 7 में एक अंश है जो इसे बिल्कुल स्पष्ट करता है, और हम पद 16 को पढ़ेंगे जहाँ यह बात कही गई है कि जहाज़ में जाने वाले जानवर हर जीवित प्राणी के नर और मादा थे जैसा कि परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी थी, फिर प्रभु ने दरवाज़ा बंद कर दिया। वह वही है जिसने नूह और नई दुनिया को इस जहाज़ के सुरक्षा जाल में बंद कर दिया जिसे नूह ने प्रभु के निर्देश के तहत बनाया है।

सत्र 8 भाग 2 होगा, नूह और जलप्रलय।

यह डॉ. केनेथ मैथ्यूज और उत्पत्ति की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 7 है, नूह और जलप्रलय, भाग 1, उत्पत्ति 6:9-9:29।